रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग डी.के. कालेज
डुमरॉव बक्सर

बी.ए. भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा

रीतिकाल -

भिखारीदास -

काव्य की रीति सिखी सुकवीन सों
देखी सुनी बहुलोक की बाते।

ब्रजभाषा हेतु ब्रजबास ही न अनुमानौ,
ऐसे ऐसे कविन की बानी हूँ सों जानिए।

आगे के कवि रीझहै, तो कविताई न तो
राधा कन्हाई सुमिरन कौ बहानौ है।
ब्रजभाषा भाषा रुचिर,
कहै सुमति सब कोई।
मिल संस्कृत पारस्यौ,
पैं अति प्रवाट जु होई॥

ब्रज, मागधी मिलै अमर,
नाग यवन भाखनि।
सहज पारसी हूँ मिलै
षट् विधि कहत बखानि॥

जातें कछु हौं हूँ लहों कविताई को पंथ।

श्रीमानन के भौन में भोग्य भामिनी और
तिनहूँ को सुनियाट में गनैं सुकवि सिरमौर॥

अँखियाँ हमारी दई मारी सुधि बुधि हारी।

भाषा - बरनन में प्रथम,
तुक चाहिए बिसेषि।
उत्तम मध्यम अधम से,
तीन भाँति को लेखि॥

अधर मधुरता कठिनता कुच तिक्षनता त्यौर
रस कवित्त परिपक्वता जाने रसिक न और

एक लहैं तप पुंजनि के फल
ज्यौं तुलसी अरु सूर गोसाई।
एक लहैं बहुसंपत्ति के सब
भूषन ज्यों बर बीर बड़ाई॥
एकनि को जस ह्वै सो
प्रयोजन है रसखानि रहीम की नाईं।
दास कवित्तन की चरचा
बुधिवंतनी को सुख दैत सब ठाईं॥

अलक पै अलिवृंद भाल पै अधर चंद।
भ्रू पै धनु नयननि पै वारों कंजदल में॥

अरविन्द प्रफुल्लित देखि के भौंर अचानक
जाई अरैं पै अरैं।

अमिय हलाहल मद भरे,
सेत स्याम रतनार।
जियत, मरत, झुकि झुकि परत,
जेहि चितवत एक बार ॥
रसलीन

ब्रजबानी सीखन रची यह रसलीन रसाल।
गुन सुबरन नग अरथ लहि, हिय धरियो ज्यौं माल।
रसलीन

फूले कुंजर अलि भ्रमत,
सीतल चलत समीर।
भान जात काकी न
मन जात भानुजा तीर ॥
रसलीन

दृगन जोरि मुसकाय अरु,
भौंहें दोउ नचाय।
ओठनि औंठि बनाइ यह,
प्राण उमेठत जाइ ॥
रसलीन।

दृगन चोरी मुसकान अरु भौंहें दोउ नचाय।
चख चलि स्रवन मिल्यो चहत, कच बढ़ि छुवन छवानि

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी – विभाग डी.के. कालेज
डुमराँव बक्सर बिहार